❀ श्रीजिनेन्द्रायनमः ❀

—:o:—

न्यामत विलास

* अंक १ *

स्त्रीगान जैनभजन पचीसी ॥

(१)

॥ चाल ॥ जी सुरझानी ढोला म्हां म्हारी रेल थंबेगी जी ॥

—:o:—

जीसुन गौतम स्वामी जिन वाणी तनक सुनावो जी ॥ टेक ॥
स्वामी मैं भव भव में दुख पायो ।
अब भवदधी पार लंघावो जी ॥ १ ॥
रागादि घटा मनछाई ।
मनका अंधेर मिटावो जी ॥ २ ॥
न्यामत अरदास सुनी जे ।
मोहे शिव मार्ग दरशावो जी ॥ ३ ॥

(२)

॥ चाल ॥ जानी थारो बंगला कितनीकिं दूर ॥ आती जाती हारी हो म्हारे भरतार ॥ गोदीम्हाने लेलो जी म्हारे भरतार ॥

—:o:—

तब दिए क्यों प्रभु सब शृंगार ।
मोहे बतलावो जी नेम कंवार ॥ टेक ॥
प्रभु जी काहे भई हम चूक ।
खड़ी छिटकाय गए गिरनार ॥ १ ॥

प्रभुजी नव भवकी थी प्रीति ।
छिन में छोड़, लिया तप धार ॥ २ ॥
प्रभुजी शरण गही तुम आय ।
न्यामत आवागमन निवार ॥ ३ ॥

(३)

॥ चाल ॥ चूड़ा तो मेरे मने जुड़ादो हस्ती दांत का ॥

—:o:—

संजम तो मेरे मने जाने दो गिरिनार को ॥ टेक ॥
ब्याहन प्रभु जब आईयां ।
अरी सखियो छप्पन कोड़ जादू लार ॥ १ ॥
मारग पशु दुखी देखियां ।
अरी सखियो गये हैं दयाऐ विचार ॥ २ ॥
कर कंगण सब तोड़ियां ।
अरी सखियो मोर मुकुट दिये डार ॥ ३ ॥
ले माता भूषण तेरे ।
अरी मेरे प्रभु संग गए री सिंगार ॥ ४ ॥
मात पिता समझाईयां ।
अरी राजल लावें दूधर भरतार ॥ ५ ॥
काहे को वर ढूंढियां ।
अरी माता छोड़ा तेरा घर बार ॥ ६ ॥
सब जग ममता मैं तजी ।
अरी मैं तो लेऊंगी अणुव्रत धार ॥ ७ ॥

क्यों जग लख दुख पाईयां ।
अरी सखियो यह जीवन दिन चार ॥ ८ ॥
न्यामत कर जोड़े कहे ।
प्यारे धन्य उनका सुविचार ॥ ९ ॥

(४)

॥ चाल ॥ पहली पैडी में चढी रे चंदा छिपरे ॥ कै दिनां की नींद निकस आयो दिन रे ॥

———:०:———

अब तो चेतन चेत औसर बन आयोरे ॥ टेक ॥
नरकों में जियाकाल अनादि गंवायो रे ।
स्वरगों में माला लख कर दुख पायो रे ॥ १ ॥
मानुष भव में गरभ कष्ट उठायो रे ।
अब क्यों भूला मूढ़ कहा मद छायो रे ॥ २ ॥
न्यामत मिथ्या नींद में क्यों सोवे रे ।
भज पारश भगवान उत्तम कुल पायो रे ॥ ३ ॥

(५)

॥ चाल ॥ म्हारे अनंत वधावा जी राज शुभ की घड़ी ॥

———:०:———

आज जनम लियो जिन राज शुभकी घड़ी ॥ टेक ॥
चैत सुदी नौमी दिन अवधपुर मांह ।
ऐरी नृप नाभी मरु देवी के नन्दहु आय ।
शुभ की घड़ी आज जन्म लियो जिनराज ॥ १ ॥
मति श्रुत अवधि तीनों ज्ञान उपाय ।
ऐरी तीन भवन चित चाय करें सुर आय । शुभ० ॥ २ ॥

इन्द्रों का आसन कंपा मुकुट झुकाय।
ऐरी धन्यराज गजराज चढ़ ऊठ आय। सुभ० ॥ ३ ॥
नाचैं किन्नरी देवी निरत कराय।
ऐरी इंद्राणी मरु देवी को अर्घ चढ़ाय ॥ सुभ० ॥ ४ ॥
जय जयंकार करें सुर मन हर्षाय।
ऐरी छम छम छम छम नाटक इन्द्र रचाय। सुभ० ॥ ५ ॥
जाय शची मरु देवी को नींद रचाय।
ऐरी रच माया सुत जिनजी को गोद लिवाय। सुभ० ॥ ६ ॥
अपने पती सुर इंद्रको आन दियाय।
ऐरी देख तिर्पत नहीं लोचन सहस बनाय॥ सुभ० ॥ ७ ॥
छीरसमन्दर देव गये उमगाय।
ऐरी एकहजार कलश जल सूं भरलाय ॥ सुभ० ॥ ८ ॥
मेरु पे इंद्रने हाथों से कलश उठाय।
ऐरी एकही बार प्रभुजी के शीस ढुराय। सुभ० ॥ ९ ॥
इन्दराणी जिन जीका सिंगार कराय।
ऐरी गल माला कानों कुंडल झलकाय। सुभ० ॥ १० ॥
तीनों लोक तिलक शिर तिलक कराय।
ऐरी श्री जिन जिनजी की माताको सोंपे जाय। सुभ०॥११॥
ऐसे जिनेश्वर जुगजुगजीवो महाराज।
न्यामत श्री जी के चरणन शीस नमाय। सुभ० ॥ १२ ॥

(६)

॥ चाल ॥ जी सुरज्ञानी ढोला वहां म्हारी रेल थमैगी जी ॥

——:o:——

जी सुन चेतन प्यारे मत निरखो नार पराई जी ॥ टेक ॥
प्यारे जो परनारी मुख जोड़े ।
एजी अंत नरक उठ जावै जी । जी० ॥ १ ॥
ऐजी रजनी विजली ज्यूं चमकै ।
देखतही मन वोहरावे जी ॥ जी० ॥ २ ॥
उन शिव सुंदर त्रिय पाई ।
जिन शील माल गललाई जी । जी० ॥ ३ ॥
न्यामत भज आदि जिनंदा ।
यह भव भव में सुखदाई जी । जी० ॥ ४ ॥

(७)

॥ चाल ॥ हमतो आवेंगे प्यारी स्ससर अपनी तुम वैठी रहोना मोरे तान ॥
(सावन का गीत) (राजल व श्री नेमनाथ जीके सवाल जवाब)

——:o:——

व्याहन आये प्यारे सब मन भाये-तोरण पर चढ़ आए ।
मारग वैन सुने पशुवन-क्यों कंगण तोड़ वगाए ॥ १ ॥
धीर धरो हे प्यारी समता-राखो-क्यों जग लख दुख पावो ।
यह जीवन दिन चार है-राजल कंगण काम न आवो ॥ २ ॥
तोड़मुकुट रथ फेर लिया-प्रभु शंका मन नहीं आई ।
नौ भव की मोरी प्रीत लगी थी-छिन में आज गंवाई ॥ ३ ॥
अनंती प्रीति करी हे-राजल अनंती बैर बसाए ।
झूठी प्रीति जगतकी-राजल काहे को पछतावे ॥ ४ ॥

कहे राजल हठ छोड़ पिया-इन बातन कौन बड़ाई ।
सुख बिलसन का औसर प्यारे-क्यों मन आंट लगाई ॥ ५ ॥
इस जग में सुख नेक न राजल-अनंती काल गवांए ।
जून चौरासी में फिर हारे-अब कैसे सुख पावे ॥ ६ ॥
न्यामत बिनती करै प्रभु जी-शरण गही मैं तेरी ।
जनम जनम पद पंकज सेऊं और न कछु चाह मेरी ॥ ७ ॥

(८)

॥ चाल ॥ उलझी मेरी बेसर करणफूल में ॥
उलझी को तुमही सुलझाइयो मोरे बलमा करणफूल में ॥

——:o:——

उलझा मोरा जीया जी करम फंद में ।
उलझे को तुमही सुलझाईयो मोरे प्रभुजी करम फंद में । टेक ।
जग नायक सुमती के दायक ।
कुमती का संग छुड़ाईयो मोरे प्रभुजी पड़ीहूं बंद में ॥ १ ॥
तारण तरण सुनो जश तेरो ।
आवागमन मिटाईयो मोरे प्रभुजी फंसी हूं द्वंद में ॥ २ ॥
जीरण नावसमंदर गहरा ।
तुम ही तो पार लंघाईयो मोरे प्रभुजी धसी हूं संधमें ॥ ३ ॥
भरमतहूं संसार भवरमें ।
मुक्ती की डगर बताईयो मोरे प्रभुजी न सूझे धुंद में ॥ ४ ॥
न्यामतकी अरदास यही है ।
भव भव दरस दिखाईयो मोरे प्रभुजी भयाहूं अंध में ॥ ५ ॥

(९)

॥ चाल ॥ अजहू न आए किन भरमाए झुरवों अपने में महलोंरी सखी ॥

—:o:—

लावो समझाये किन भरमाये-नेम पिया गिर जायेरी सखी।
खड़िये निहारूं मन में विचारूं-संजम धारूं मनलायरी सखी।टेक।
व्याहन आये उलटेही धाये।
पशवन बैन सुनायेरी सखी। लावो० ॥ १ ॥
मोर मुकुट कर कंगण तोड़े।
जिन दीक्षा चित लायरी सखी। लावो० ॥ २ ॥
तज गये हम राजल सी नारी।
नव भव प्रीत गँवाएरी सखी। लावो० ॥ ३ ॥
शिवनारी से नेह लगायो।
हमसे अंतर लायरी सखी। लावो० ॥ ४ ॥
पशु बैराग निमित लख प्रभुने।
द्वादश भावना भायरी सखी। लावो० ॥ ५ ॥
लोकांतिक की सुनकर बतियां।
सबसे चित्त चुरायरी सखी। लावो० ॥ ६ ॥
नगनरूप गिरि चढ़भये त्यागी।
सिद्धन को शिर नायरी सखी। लावो० ॥ ७ ॥
न्यामत राजल कंथकी अब।
शरण सितावी आयरी। लावो० ॥ ८ ॥

(१०)

॥ चाल ॥ बाप खड़ा समझाय जी ॥ बहुतड़ राखों म्हारी जीजी का मान कंगण देदीजिजी ॥ (यह गीत औरतैं बेटा होने पर गाती हैं)

—:o:—

बाप सुता समझाईयां ।
बेटी तुम सुकुमार शरीर संयम मत लीजै जी ।
प्यारी मानो हमारी बात-विवाह कर लीजै जी ॥
राजल संजम खांड़ेकी धारसंयम मत लीजै जी ॥ १ ॥ टेक ॥
बावल देही का काहे गुमानजी ।
यह तो छिन में बीनस जाय संयम मोहे दीजे जी ॥
अजि मैं ना मानूं यह थारी बात हट मत कीजे जी ।
मेरे संजम को चितचाव विवाह मत कीजे जी ॥ २ ॥ टेक ॥
मात सुता समझाईयां-बेटी सुख बिलसो संसार संजम मत लीजै जी ॥ प्यारी ॥ ३ ॥
माता यह संसार असार जी ॥
मैं तो लेऊंगी अणुव्रत धार-संजम मोहे दीजे जी ॥ अजी मैं४
भाई बहन समझाईयां ।
जीजी तुमहो राज कुमार-संजम कैसे लीजे जी । प्यारी ॥५॥
भाई किसकाराज और पाटजी ।
देखो यह जीवन दिन चार-संजम मोहे दीजे जी । अजि मै ६॥
सखी सब मिल-समझाईयां ।
राजल एक सुनो म्हारी बात-संजम मत लीजे जी । प्यारी ॥७॥

सखियो सब मानूं थारी बात जी ।
मैं ना मानूं यह थारी बात-संजम मोहे दीजे जी । अजी०।८ ॥
न्यामत चरणन शीस निवाय जी ।
प्रभु कीजे भवो दधि पार संजम व्रत दीजे जी ।
मेरे संजम लेने को चाव संजम मोहे दीजे जी ।
छिन छिन आयू बीती जाय ढील मत कीजे जी ॥ ९ ॥

(११)

चाल ॥ थारो मुल्क म्हारो कौन जवानी को रोकेगा कौन ॥

—:o:—

तुम बिन प्रभु म्हारो कौन करमों से छुड़ावेगा कौन । टेक ॥
करम मेरे महा वैरी ॥ भवो इन में घेर लिया ।
धर्म रतन म्हारो लूटे हैं तुम बिन बचावेगा कौन ॥ १ ॥
क्रोध मान माया लोभ ने दर्शन ज्ञान हरा ।
चारित संजम छीनें है तुम बिन हटावेगा कौन ॥ २ ॥
चेतन क्यों दुख मोह की नींद में सोय रहा ।
जागना हो तो जागरे फिर फिर जगावेगा कौन ॥ ३ ॥
न्यामत इस जग जाल में निश दिन भूला फिरे ।
तुम बिन मुक्ती की डगर प्रभु जी बतावेगा कौन ॥ तुम०४॥

(१२)

॥ चाल ॥ तुम सुनो मुझोने सय्यां । गलहार गिरने दय्यां ॥

—:o:—

प्रभु तुम दर्शन मैं पाए ॥ मेरे सारे भरमामिटजाए ॥ १ ॥
चरणन शीस नवाऊं । सब मन वंछित फल पाऊं ॥ २ ॥

तुम देवन के देवा । कर जोड़करूं नित सेवा ॥ ३ ॥
तुम नाभि मरु देवी के लाला । मैं सदा जपूं गुणमाला ४ ॥
सुर नर तुमरे गुण गावैं ॥ अपने सब पाप नशावैं ॥ ५ ॥
तुम वीतराग छवि छाई ॥ प्रभु सो मेरे मन भाई ॥ ६ ॥
रवि सम कित आज प्रकाशो । मेरा मिथ्या तिमर विनाशो ७ ॥
प्रभु एक कह्यो म्हारो कीजो ॥ तुम भव भव दर्शन दीजो ८ ॥
जब लग हो न मुक्ती नेड़े । तुम भक्ती बसो उर मेरे ॥ ९ ॥
प्रभु अर्ज सुनो इक मेरी । मे री मेटो भव भव फेरी ॥ १० ॥
प्रभु न्यामत ओर निहारो । मोहे कीजो भव दधि पारो ॥ ११ ॥

(१२)

॥ चाल ॥ बने पर हार वारूंरी ॥ मैं तो सोने की गूठियां रूमाल वारूंरी ॥ (ब्याह में गाया जाता है)

प्रभु पे अर्घ उतारूंरी ।
मैं तो गजमोतियन का हार वारूंरी ॥ टेक ॥
गंगाजल भरकर लाऊंरी ।
मैं तो श्रीजिन को अशनान कराऊंरी ॥ १ ॥
धूप नई वेदी बनाऊंरी ।
मैं तो चंपा चमेली के फूल मंगाऊंरी ॥ २ ॥
थाल अक्षत भर लाऊंरी ।
मैं तो चंदन घिस घिस चरण चढाऊंरी ॥ ३ ॥
रतन के दीप चढ़ाऊंरी ।
न्यामत श्री फल लाये शिव फल पाऊंरी ॥ ४ ॥

(१४)

॥ चाल ॥ जी बना अपने संग के बराती लाईयो ॥
लाईयों जी मोरे छैल बना ॥

जी जिया शिव राणी से ब्याह कराईयो ।
कराइयो जी मोरे सार जिया ॥ १ ॥
जी जिया नेम धर्म कंगण बंधवाईयो ।
बंधवाईयो जी मोरे सार जिया ॥ २ ॥
जी जिया समकित का मोड़ लगाईयो ।
लगाईयो जी मोरे सार जिया ॥ ३ ॥
जी जिया दान शील रथ चढ़ आईयो ।
आईयो जी मो सार जिया ॥ ४ ॥
जी जिया ज्ञान दर्शन संग में लाईयो ।
लाईयो जी मोरे सार जिया ॥ ५ ॥
जी जिया बारा वृत बरात चढ़ाईयो ।
चढ़ाईयो जी मोरे सार जिया ॥ ६ ॥
जी न्यामत राग भाव को मनसे हटाईयो ।
हटाईयो जी मोरे सार जिया ॥ ७ इति ॥

(१५)

॥ चाल ॥ चाल सुहाग की ॥ सुहाग मांगन जाइयो ॥
अपनी अम्मा जी के आगे सुहाग० ॥

मैं शीस आकर न्यायो श्री अरिहंत जी के आगे ।
मैं शीस आकर न्यायो श्री अरिहंत जी के आगे ।

सिद्ध ज्ञानी जीके आगे ॥ गुर त्यागी जी के आगे ।
दया राणी जीके आगे ॥ जिनवाणी जी के आगे ।
जी मैं ना मानूं मैने झूटे शासन त्यागे ॥
मैंना मानूं मैंने रागी देव त्यागे ।
मैंना मानूं मैंने रागी देव त्यागे ।
मैंनामानूं मैं पाखंडी गुरु त्यागे ।
मैं मुक्ती मांगन आई श्रीअरिहंत जीके आगे ।
मैं मुक्ती मांगन आई श्री अरिहंत जीके आगे ।
सिद्ध ज्ञानी जीं कें आगे ।
गुर त्यागी जी के आगे ।
दया राणी जीके आगे ।
जिनवाणी जीके आगे ।
जी मैना मानूं मैने झूठे शासन त्यागे ।
मैंनः मानूं मैंने रागी देव त्यागे ।
मैंना मानूं मैं पाखंडी गुरु त्यागे ।
मैंना मानूं मैं रागी देव त्यागे ।

(१६)

चाल ॥ चालबधावेकी पहिलाबधावा सखीरी मेरे सुसरेके वारे । सखीरी मेरे सुसरे के वारे ॥ दुजा बधावा मेरे दलपत जेठ के ॥ दूजा बधावा० ॥

पहला बधावा सखीरी जिन गर्भ में आईयां ।
सखीरी म्हरे रतन बरसाईयां ।
दूजा बधावा प्रभु जनमे आयके ।

दूजा बधावा सखी मंगल गायके । १ ।
तीजा बधावा सखीरी जगत सब त्यागियां ।
सखीरी निज ध्यान में लागियां ।
चौथा बधावा लियोरी केवल ज्ञान को ।
चौथा बधावा हरा री मोह मान को । २
पांचवां बधावा सखीरी समोशरण साजियां ।
सखीरी लख दुख सब भाजियां ।
छठा बधावा शिव मग दरसाईयां ।
छठा बधावा मिथ्यात नशाईयां । ३ ।
सातवां बधावा सखीरी शिव संदुर पाईयां ।
सखीरी शिव मंदर जाईयां ।
सातों बधावे करो न्यामत गाय के ।
सातों बधावे करो चित्त हरषाय के । ४

(१७)

चाल (चाक फेरो के वक्त गीत गाने की)

घर छोड़ रुकमण बाहर आई ॥ चौरी तो छाई तेरे साजना ॥

अघ छोड़ चेतन सुपथ आवो ।
तोहेतो गुरु समुझाईयां ।
फिर औसर चूके दुख पावोगे चेतन ।
सीस को धुन पछताईयां । १ ।
तज झूट चोरी कुशील परिग्रह ।
दया तो नित चित आनिये ।

इस जग में अय न्यामत सब पर नारी ।
माता बहन सम जानिये । २ ।

(१८)

चाल ॥ म यानी स्यानी मेरा घर न लुटाय दीजो ॥
सासू जी आवें सैंय्यां उसने जवाब दीजो ॥
सासू के बदले मेरी अम्मा ने बुलाय दीजो ॥
(लड़का होने पर यह गीत गाया जाता है

हे जिन वाणी मेरा भ्रम तो मिटाय दीजो । टेक ।
मिथ्या अंधेर छायो इसने हटाय दीजो ।
मोह नींद सेती मुझको जगाय दीजो ॥ १ ॥
तत्वों का सच्चा शरधान करवाय दीजो ।
कर्म जलाय शिवराणी को मिलाय दीजो ॥ २ ॥
लाखों पाखंड जग में सबको हटाय दीजो ।
मुक्ती के रस्ते न्यायमत को लगाय दीजो ॥ ३ ॥

(१९)

चाल (सीठना) दिन चढ़ा चढ़ा रंग महल में
अच्छा दिन चढ़ा चढा रंग महल में ॥ अरे हां गोरी दिन
चढ़ा चढ़ा रंग महल में हे मलंग गोरी दिन चढ़ा चढ़ा रंग० ॥

मन अब तो लगा सतसंग में ।
अच्छा मन अबतो लगा सतसंग में ।
अरे हां प्यारे मन अबतो लगा सतसंग में ।
समय सार प्यारे मन अबतो लगा सतसंग में । टेक ।
तूने बचपन रुलाया खेल कूद में ।

किया हित ना अहित का विचार प्यारे। मन अब० । १ ।
तैं जवानी गंवाई विषय भोग में।
किया विषयों को तूने निज यार प्यारे। मन अब० । २ ।
अब तो न्यामत कुमत तज दीजिये।
वरने आवे बुढ़ापा दिन चार प्यारे। मन अब० । ३ ।

(२०)

॥ चाल ॥ ऊभी रजवन अर्ज करे ॥ दादलजी दो परनाय ॥
(ये गीत लड़की के ब्याह में गाया जाता है)।

———:o:———

ऊभीराजल अर्जकरे । ऊभीराजल अर्जकरे ।
जानेदो जी गिरनार।
माता मेरा जिया नहीं भोगों में।
जाने दो जी गिरनार।
माता मेरा जिया नहीं भोगों में।
नहीं भोगों में नहीं भोगों में।
नहीं भोगों में नहीं भोगों में ॥
कोई यो झूटा संसार।
माता मेरा जिया नहीं भोगों में ॥
सब स्वारथ का परवार।
माता मेरा जिया नहीं भोगों में । १ ॥
ऊभी राजल अर्ज करे।
कर जोड़े राजल अर्ज करे।
मेरा तारो हार सिंगार।

माता मेरा जिया नहीं भोगों में ॥
कटि बेसर मोतियन हार ।
माता मेरा जिया नहीं भोगों में ।
नहीं भोगों में संजोगों में ।
नहीं घर के नारी लोगों में ।
कर न्यामत निज उपकार ।
माता मेरा जिया नहीं भोगों में ॥ २ ॥

(२१)

॥ चाल ॥ छोटीसी खिड़की चंदन चिर्चीं जिसमें बैठी रुकमण राम ।
क्या सोवे अलबेली रुकमण सूर्ज मंडेरे आया राम ॥

:o:

भवसागर पर चारूं गतके चारों पेड़ खड़े तू जान ।
इक छोटी सी डाली पर तू क्या सोता मूरख सुलमान ॥ १ ॥
निश दिन काले धोले चूहे कतरैं डाली को हरआन ॥
नीचे खड़ा मौत का हाथी तेरी ओर लगाए ध्यान ॥ २ ॥
आधी पौनी कटगई डाली तू नहीं कछु करता है ज्ञान ॥
विषय मधूकी बूंद कारणे न्यामत क्यूं खोता है जान । ३ ॥

(२२)

॥ चाल ॥ अम्मा मुझे तेरा जमाई मार्ता ॥ बेटी तुझे
किस गुनाह पर मार्ता ॥

:o:

प्यारे तुझे शिवमारग दिखलाईये ।
कहे तो तुझे तत्व उपदेश सुनाईये ।

जिया तुझे और किस विध समझाईये । १ ।
प्यारे तुझे द्रव्य सरूप दिखाईये ।
हां रे नित वारा भावन भाईये ॥
जिया तुझे और किस विध समझाईये ॥ २ ॥
प्यारे कुमता के संग न जाईये ।
हां रे विषयों में चित नहीं लाईये ।
जिया तुझे और किस विध समझाईये ॥ ३
प्यारे निज आतम के गुण गाईये ।
हां रे पर परनित से हट जाईये ।
जिया तुझे और किस विध समझाईये ॥ ४ ॥
प्यारे परमातम पद को पाईये ।
हां रे अब न्यामत ढील न लाईये ॥
जिया तुझे और किस विध समझाईये ॥ ५ ॥

(२३)

॥ चाल ॥ है गोरी जी मैं थारा गुलाम ॥ कहो तो दिवला जलाय दूं ॥ नहीं राजा जी नहीं थारो काम दिवला जलावें थारी बांदियां ॥ (लड़का होनेपर गाया जाता है)

—:o:—

हे राजल है क्यों दुखी मनमांह ।
वर तो मिलावें सुख कारियां ॥
नहीं मातारी नहीं यह विचार ।
अब तो तजा घर वारियां ॥ १ ॥

हे राजल हे तू रहो घर मांह ॥
घर में संजम धारियां ।
नहीं मातारी नहीं यह बिचार ।
मैं तो जाऊंगी गिरनारियां ॥ २ ॥
हे राजल है तप खांड़े की धार ।
तू कोमल किम धारियां ॥
नहीं मातारी न करें यह बिचार ॥
न्यामत हम मोह छारियां ॥ ३ ॥

(२४)

॥ चाल ॥ (भाव) जी पिया सांमन के पहलडे ॥ मास मेरा राजीरा
दो जने मतायें मताईयां ॥

---:o:---

रे जिया झूटा है संसार का । खेल मेरा जीयरा ॥
आतम गुण चित लाईयां ॥ १ ॥
रे जिया स्वारथ परवार का । देख मेरा वीयरा ॥
किस में तू जीये को लगाईयां ॥ २ ॥
रे जीया सुख दुख तेरे कर्म का ॥ राखं मन धीयरा ॥
क्यूं जग लख दुख पाईयां ॥ ३ ॥
हे प्रभु न्यामत को तारियो । पार मोरे श्रीजी ।
ते रे तो दर पर आईयां ॥ ४ ॥

[२५]

॥ चाल ॥ बावल के पछवाड़े री तुलसां ॥ यह तुलसां किन दूज मलयां ॥
(यह गीत लड़की के व्याह में गाया जाता है) ॥

——:o:——

चलोरी सखी चलो मंगल गावें-श्री महावीरने जनमलियो ।
धन घड़ी धन आजकी रतियां-श्री जयवीर ने जनम लियो १॥
इन्द्र शची सब रल मिल आए-हँस हँस तांडव नृत्य कियो ॥
धनपत रच गज़ कर असवारी-पांडव वन जिन न्हवन कियो ।२॥
मोतियन चौंक पुरावो री सखियों-सारे नगर में आनंद भयो ॥
न्यामत सब तन मन धन वारो-भाज जगत दुख दूर गयो ३ ॥

इति स्त्रीगान जैन भजन पचीसी समाप्तम्

——:o:——

(नोटिस)

न्यामतविलास के निम्न लिखित भाग तैय्यार हो चुके हैं मगर अभीतक वह ही अंक छपे हैं जिनके सामने मूल्य लिखा गयाहै।

अंक	नाम पुस्तक		नागरी	उर्दू
१	जिनेन्द्र भजन माला	....	I)	
२	जैनभजन रत्नावली	....	I)	
३	जैनभजन पुष्पावली			
४	पंच कल्याणक नाटक			
५	न्यामतनीति			
६	भविसदत्त तिलकासुन्दरी नाटक			
७	जैनभजन मुक्तावली	....	=)	
८	राजलभजन एकादशी	...	-)	
९	स्वर्गीन जैन भजन पचीसी	...	=)	
१०	कलियुगलीला भजनावली	....	=)	-)॥
११	कुन्तीनाटक	....	=)	
१२	चिदानन्द शिवसुन्दरी नाटक	...	॥=)	I=)
१३	अनाथ रुदन	....	-)	
१४	जैनकालिज भजनावली			
१५	रामचरित्र भजनमंजरी			
१६	राजल वैराग्यमाला			
१७	ईश्वर स्वरूप दर्पण			
१८	जैन भजनशतक	....	I)	
१९	थ्येटरीकल जैनभजन मंजरी	....	=)	=)
२०	मैनासुन्दरी नाटक	...	१॥)	
	,, ,, सजिल्द	....	१॥।)	

पुस्तक मिलने का पता-

न्यामतसिंह जैन सैक्रेटरी डिस्ट्रिक्ट बोर्ड हिसार (पंजाब)

(नोटिस)

न्यामतविलास के निम्न लिखित भाग तैय्यार हो चुके हैं मगर अभीतक वह ही अंक छपे हैं जिनके सामने मूल्य लिखा गया है।

अंक	नाम पुस्तक		नागरी	उर्दू
१	जिनेन्द्र भजन माला	....	।)	
२	जैनभजन रत्नावली	....	।)	
३	जैनभजन पुष्पावली			
४	पंच कल्याणक नाटक			
५	न्यामतनीति			
६	भविसदत्त तिलकासुन्दरी नाटक			
७	जैनभजन मुक्तावली	....	=)	
८	राजलभजन एकादशी	...	-)	
९	रागिन जैन भजन पचीसी	....	=)	
१०	कलियुगलीला भजनावली	....	=)	-)॥
११	कुन्तीनाटक	....	=)	
१२	चिदानन्द शिवसुन्दरी नाटक	...	॥=)	।=)
१३	अनाथ रुदन	....	-)	
१४	जैनकालिज भजनावली			
१५	रामचरित्र भजनमंजरी			
१६	राजल वैराग्यमाला			
१७	ईश्वर स्वरूप दर्पण			
१८	जैन भजनशतक	....	।)	
१९	थ्येटरीकल जैनभजन मंजरी	....	=)	=)
२०	मैनासुन्दरी नाटक	....	१॥)	
	” ” सजिल्द	....	१॥।)	

पुस्तक मिलने का पता—

न्यामतसिंह जैन सैक्रेटरी डिस्टरिक्ट बोर्ड हिसार (पंजाब)